कृषि शिक्षा संग्रहालय : एक नजर में

कृषि विश्वविद्यालय, कोटा के मुख्यालय परिसर में राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत परियोजना "कृषि प्रौद्योगिकी प्रबन्धन एवं गुणवत्ता सुधार केन्द्र" अन्तर्गत कृषि शिक्षा संग्रहालय की स्थापना वर्ष 2021 में की गई है। इस संग्रहालय में कृषि की नवीनतम तकनीकियों को विभिन्न श्रृव्य एवं दृश्य माध्यमों से दर्शाया गया है ताकि कृषक समुदाय, विद्यार्थी एवं अन्य इसका लाभ कृषि तकनीकी अपनाने में उठा सकें। इसी परियोजना के अन्तर्गत ''किसान कॉल सेन्टर'' की भी स्थापना की गई है ताकि कृषक समुदाय टेलीफोन के माध्यम से अपनी कृषि संबंधी समस्याओं का समाधान पा सकें।

कृषि विश्वविद्यालय, कोटा के कृषि प्रौद्योगिकी प्रबन्धन एवं गुणवत्ता सुधार केन्द्र में स्थित कृषि शिक्षा संग्रहालय हाडौती क्षेत्र में अपनी किस्म का अनूठा संग्रहालय है। इसमें मानव जीवन की उत्पत्ति, प्रागैतिहासिक काल से लेकर वर्तमान काल तक कृषि में हुए विकास तथा अब तक विकसित तकनीकीयों के विकास को रोचकता से दर्शाया गया है।

प्रागैतिहासिक काल से ही कृषि और पशु पालन भारतीय अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार रहे हैं। भारत के स्वाधीन होने के पश्चात पंचवर्षीय योजनाओं में कृषि के विकास पर अत्यधिक बल दिया गया। फलस्वरूप देश में कृषि क्षेत्र में कई क्रांति हुईं और हमने खाद्य उत्पादन में आत्मनिर्भरता हासिल की। आज हम न केवल अपने देशवासियों को भर पेट भोजन उपलब्ध करा रहे हैं बल्कि भविष्य में आने वाली हर चुनौती का सामना करने को भी तैयार हैं। कृषि विश्वविद्यालय कोटा ने कृषि अनुसंधान, कृषि शिक्षा एवं प्रसार शिक्षा के क्षेत्र में कई नये आयाम स्थापित किये हैं। इन नये आयामों की प्रौद्योगिकी एवं कहानियों को इस कृषि शिक्षा संग्रहालय में प्रलेखित किया गया है। इस संग्रहालय में लगी प्रदर्शनियों को मुख्यतः चार अनुभागों क्रमशः विश्वविद्यालय एक नजर, अनुसंधान, प्रसार एवं शिक्षा के बारे में दर्शाया गया है।

संग्रहालय के मुख्य आर्कषण

जीवन की उत्पत्ति एवं मानव सभ्यता का विकास

संग्रहालय के इस अनुभाग में जीवन की उत्पत्ति एवं मावन सभ्यता के विकास को प्रालेखित किया गया है। जीवन का पार्दुभाव 15 अरब वर्ष पूर्व हाइड्रोजन बादलों के विस्तारीकरण (बिंग बेंग) के फलस्वरूप हुआ। चार अरब वर्ष पूर्व हाइड्रोजन का रूपान्तरण मिथेन, अमोनिया एवं जल में हुआ। इन निर्जीव पदार्थो के अणुओं के क्रमिक संयोजन से डीएनए एवं आरएनए का विकास हुआ, जो जीवन के मूल तत्व हैं। कृषि से ही मानव सभ्यता प्रारंभ हुईं, तथा पाषाण युग, मध्य पाषाण युग एवं नवपाषण युग में हुए मानव सभ्यता के विकास को भी प्रदर्शनी के माध्यम से दर्शाया गया है साथ ही कृषि जीवन की शुरूआत लकड़ी के हल से प्रारम्भ होकर आज के ड्रोन तक के विकास को फार्म मशीनरीकरण के इतिहास को रोचक तरीके से दर्शाया गया है।

कृषि विश्वविद्यालय, कोटा : एक अवलोकन

राजस्थान में कोटा संभाग कृषि की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान रखता है। कृषि विश्वविद्यालय, कोटा की स्थापना 14 सितम्बर, 2013 को दक्षिणी-पूर्वी एवं पूर्वी राजस्थान के वर्षा आधारित एवं नहरी सिंचाई कृषि पारिस्थितिक स्थिति में चहुमुखी कृषि विकास करने हेतु की गई। संग्रहालय के इस अनुभाग में कृषि विश्वविद्यालय, कोटा का कार्यक्षेत्र, मिशन, विजन, लक्ष्य, उद्देश्य, मुख्य कार्य (शिक्षण, अनुसंधान, प्रसार शिक्षा) तथा विश्वविद्यालय का संस्थागत एवं कार्यात्मक संगठन को चार्ट के माध्यम से आलेखित एवं चित्रित किया गया है।

विश्वविद्यालय द्वारा विकसित क्षेत्रीय फसल किस्में

संग्रहालय में हाडौती क्षेत्र की प्रमुख फसलों की विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई किस्मों जैसे सोयाबीन (आर के एस 113, प्रताप सोया 45, प्रताप राज 24, प्रताप सोया 1 व 2), धान (प्रताप सुगंध 1), उडद (प्रताप उडद 1, 2, 3 व 4), मसुर (कोटा मसुर 1, 2, 3 व 4), चना(कोटा काबुली चना 1 व 2), मटर (कोटा मटर 1), राजमा (कोटा राजमा 1), धनियां (प्रताप राज धनियां), अलसी (मीरा, आर. एल. 914 प्रताप अलसी 1 व 2, कोटा बारानी अलसी-3, 4, 5 व 6) एवं गन्ना (प्रताप गन्ना-1) के उन्नत गुणों व विशेषताओं के साथ आलेखित किया गया है, इसके साथ-साथ इन किस्मों के जीवंत नमूने प्रदर्शित किये गये हैं।

समेकित कृषि प्रणाली : समृद्धि का आधार

समेकित कृषि प्रणाली में किसानों के खेत पर उपलब्ध संसाधन, आर्थिक स्थिति, परिवार की मूलभूत खाद्यान्न एवं पशु चारे आदि की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए स्थानीय किसानों द्वारा अपनाई जा रही परम्परागत कृषि पद्धति में सुधार लाने हेतु उपलब्ध उन्नत तकनीकी ज्ञान एवं कम लागत से अधिक लाभ देने वाले व्यवसायों का समन्वय कर प्रति इकाई भूमि व समय में अधिक से अधिक उत्पादन एवं लाभ प्राप्त करना है। समेकित कृषि प्रणाली एक टिकाऊ कृषि प्रबंधन प्रणाली है। इस प्रणाली को पर्यावरण, मृदा स्वास्थ, कृषक की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति को ध्यान में रखकर अपनाया जाता है। कृषि संग्रहालय में हाडौती संभाग के लघु एवं सीमान्त किसानों के लिए एक हैक्टेयर क्षेत्रफल के लिए विश्वविद्यालय द्वारा विकसित समेकित कृषि प्रणाली मॉडल के प्रमुख घटकों को आलेखित किया गया है तथा एक सुन्दर सुशोभित एवं सुसज्जित समेकित कृषि प्रणाली का मॉडल की प्रर्दशनी दर्शकों के लिए प्रमुख आकर्षण का केन्द्र है।

शहद उत्पादन एवं प्रसंस्करण

शहद उत्पादन के लिए फूलों के मकरंद नामक मीठे रस को मधुमक्खी अपनी जीभ की सहायता से चूसती है और इसको पेट में स्थित मधु थैली में जमा करती जाती है। इसके पश्चात इस मीठे रस को पुनः मधु थैली से निकाल कर छत्ते के कोष्ठों में उपरी भाग में जमा करती है। इस कच्चे शहद को मधुमक्खी अपने पंखों द्वारा हवा करके गाढे शहद में परिवर्तित कर देती है। इस शहद को छत्ते से निकालकर प्रसंस्करण एवं पैकेजिंग किया जाता है। संग्रहालय में शहद उत्पादन एवं प्रसंस्करण की तकनीकी के साथ 100 मधुमक्खी कॉलोनीयों की अनुमानित लागत-आय गणना को भी आलेखित कर दर्शाया गया है।

जैविक एवं प्राकृतिक खेती

किसानों को खेती के लिए कोई भी आदान बाजार जाकर नहीं खरीदने पड़े तथा फार्म पशुओं के अपशिष्ट एवं फसलों के उप-उत्पादों को उपयोग में लाकर उत्पादन लागत की कमी करके किसान की आय में वृद्धि करना प्राकृतिक खेती है। मानव स्वास्थ एवं पर्यावरण सुरक्षा आधारित जैविक एवं प्राकृतिक खेती वर्तमान की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए संग्रहालय में इस हेतु विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई तकनीकियों जैसे जीवामृत, घनजीवामृत, सस्यगव्या तथा ब्रह्मास्त्र सूत्र-2 के बारे में आलेखित एवं प्रदर्शित किया गया है। अनुसंधान में पाया कि फसलों को पोषक तत्वों की आपूर्ति/पोषण के लिए एक से अधिक जैविक स्त्रोतों का संयोजन एकल स्त्रोत की तुलना में बहुत प्रभावी है।

हाइड्रोपोनिक खेती

बिना मिट्टी का प्रयोग किये केवल पानी या पानी के साथ बालू और कंकड में की जाने वाली हाइड्रोपोनिक खेती की विश्वविद्यालय द्वारा विकसित तकनीक को संग्रहालय में प्रदर्शित किया गया है।

इसके अलावा संरक्षित खेती, स्ट्रॉबेरी की खेती, पौधशाला, फसल अवशेष प्रबंधन, जीरो टिलेज तकनीकी अपनाकर गेंहूँ का उत्पादन बढाना, संघनीय चावल प्रणाली, फसलों में सिचाई तकनीकों का सामयिक बदलाव तथा जल एवं फसल दक्षता की जानकारी के बारे में आलेखित कर प्रदर्शित किया गया है।

हर्बल कैप्सूल कोम्बो पैक

अच्छे स्वास्थ को बनाये रखने के लिए पिछले कुछ वर्षो में न्यूट्रास्युटिकल्स और फाइटोन्युट्रिएंट्रस की मांग को देखते हुए विश्वविद्यालय ने हर्बल केप्सूल कोम्बो पैक बनाए हैं, ये कोम्बो पैक मधुमेह अवरोधक, एन्टी आर्थराइटिस, अस्थमा अवरोधक, मोटापा अवरोधक, मुँहासे अवरोधक, रक्त अल्पता, नेत्र चिकित्सा, मातृत्व स्वास्थ संरक्षक, स्निग्द चमडी, केश चिकित्सा व रोग प्रतिरोधक क्षमता बढाते हैं। जिनकी तैयार करने की विभिन्न तकनीकियों को संग्रहालय में आलेखित एवं जीवंत नमूनों की प्रदर्शनी लगी हुई है।

स्टोरी टैलिंग बोर्ड

इसमें कृषि की सिंचाई की प्राचीन से आधुनिक विधियों जैसे ढेकली, रहट, चरस, इंजन चलित पम्प, सौर चलित पम्प आदि के बारे में मशीन द्वारा कहानियां बोलकर दर्शकों को सुनाया जाता है। संग्राहलय में यह 8 मिनट की कहानी आगंतुक दर्शकों को बहुत ही आकर्षित करती है।

प्रेस बटन बोर्ड

इसमें कृषि प्रसार शिक्षा में काम आने वाली तकनीकों के बारे में बड़े ही रोचक एवं मनोरंजन पूर्ण तरीके से दर्शाया गया है। इसमें तकनीकों के बारे से संक्षिप्त नोट लगाए गये हैं जिन्हें बटन दबाये जाने पर लाइट द्वारा प्रदर्शित किया गया है।

श्रव्य दृश्य कक्ष

विश्वविद्यालय की विभिन्न ईकाइयों द्वारा विकसित तकनीकियों, नवाचारों एवं तैयार किये गये कृषि उद्यमियों की सफलता की कहानियों की लघु फिल्मों को चलचित्र के माध्यम से प्रदर्शित किया जाता है। आगुंतक विद्यार्थियों को कृषि में केरियर अवसर एवं रोजगार पर लघु फिल्मो के माध्यम से जागरूक किया जाता है। संग्रहालय के इस कक्ष में करीब 50 दर्शकों को एक साथ लघु फिल्म दिखा सकते हैं तथा कियोस्क / टच स्क्रीन के माध्यम से कृषि नवाचारों के बारे में देखा व समझा जा सकता है।

मॉडल प्रदर्शनियाँ

संग्रहालय में सोयाबीन दुग्ध प्रसंस्करण संयंत्र, उन्नत मुर्गी, गाय व भैंस की नस्लें, समेकित कृषि प्रणाली के मॉडलों की प्रदर्शनी अतिसुन्दर व सुसजित लगी हुई है। संग्रहालय में विश्वविद्यालय द्वारा तैयार तकनीकी एवं उत्पादों जैसे जैविक उत्पाद, शहद, उन्नत किस्मों के बीज, कृषक उद्यमियों के जैविक व अन्य उत्पादों, खाद्य प्रसंस्करण उत्पादों की जीवत नमूनों की प्रदर्शनी भी लगी हुई है।

प्रकाशन प्रदर्शनी

संग्रहालय में विश्वविद्यालय की विभिन्न ईकाईयों द्वारा प्रकाशित प्रकाशनों की प्रदर्शनी भी लगाई गई है।

इसी संग्रहालय में विश्वविद्यालय के संघटक महाविद्यालयों के बारे में जागरूकता हेतु इनमें चल रहे विभिन्न डिग्री कार्यक्रमों को विस्तार से आकर्षित तरीके से दर्शाया गया है।

किसान कॉल सेन्टर

आज कल की खेती कई नवाचारों की ओर बढ़ रही है और खेती के लिए अनेक नई उन्नत तकनीकी उपलब्ध हैं। किसान कृषि शिक्षा संग्रहालय के साथ में किसान कॉल सेन्टर द्वारा किसान मौसम, फसल रोग, मृदा स्वास्थ, फसलों की बुवाई आदि से सम्बंधित जानकारी प्राप्त करने के लिए कॉल कर सकते हैं। किसान कॉल सेन्टर हैल्प लाईन नंबर 0744-2662700 पर कॉल करके अपनी समस्या का समाधान कर सकते हैं किसान कॉल सेंटर पर उपस्थित व्यक्ति किसानों की समस्या का समाधान तुरंत उसी वक्त करते हैं यदि वह व्यक्ति किसान की समस्या का समाधान उसी वक्त करने में असमर्थ रहते हैं तो वह उसी समय उस कॉल को किसी विषय विशेषज्ञ के पास ट्रांसफर कर देते हैं, जिससे कृषक की समस्या का हल तुरंत मिल सके।

मुद्रक : ग्राफिक्स ऑफसेट प्रिन्टर्स, कोटा (मो. 9414231079)

कृषि प्रौद्योगिकी प्रबन्धन एवं गुणवत्ता सुधार केन्द्र
राष्ट्रीय कृषि विकास योजना अन्तर्गत प्रकाशित

मार्च : 2023
संख्या : 750

प्रसार फोल्डर : मार्च, 2023

कृषि शिक्षा संग्रहालय

एक नजर में

संकलन

डॉ. मुकेश चन्द गोयल
आचार्य (प्रसार शिक्षा)
एवं प्रधान अन्वेषक (ATMQIC)

डॉ. के.सी. मीना
सह आचार्य
(प्रसार शिक्षा)

कृषि प्रौद्योगिकी प्रबन्धन एवं गुणवत्ता सुधार केन्द्र

(राष्ट्रीय कृषि विकास योजना)

प्रसार शिक्षा निदेशालय, कृषि विश्वविद्यालय, कोटा